Class - B.Com I
Subject - B.M.C
Paper - I (S)
Topic - Importance of Management
Lecture Sequence - 5

By Dr. Chandreshwar Pd. Sahu
Marwari College, Darbhanga



किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को ठीक से चलाने के लिए प्रबन्ध की बहुत ही आवश्यकता हो गयी है। कोई भी क्षेत्र हो, जैसे- आर्थिक, सामाजिक, व्यावसायिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक सभी जगह प्रबन्ध का एक महत्वपूर्ण स्थान होता है। बिना प्रबन्ध के औद्योगिक संस्था एवं व्यावसायिक संस्था भूमि, पूँजी, श्रम एवं मशीन सब बेकार हो जाता है। इसलिए आवश्यकता है कि एक कुशल प्रबन्धक हो जो इसे सुचारु से सभी साधनों को समन्वय कर औद्योगिक एवं व्यावसायिक संस्था को अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सही मार्गदर्शन दे सके। प्रबन्ध से अधिक महत्वपूर्ण मानवीय क्रिया का अन्य कोई क्षेत्र नहीं है। प्रबन्ध प्रत्येक संस्था का एक गति-शील एवं जीवनदायक तत्व है। इसके अभाव में उत्पादन के साधन केवल साधन मात्र ही रह जाते कभी उत्पादन नहीं बनते। कोई भी व्यवसाय स्वयं नहीं चल सकता इसके लिए एक कुशल प्रबन्धक का होना अनिवार्य है।

आधुनिक व्यावसायिक युग में उच्च जीवन स्तर, आधुनिक उपभोक्ता वस्तुएँ, उद्योग धन्धे, वैज्ञानिक चिकित्सा, रेल, हवाई यातायात एवं सन्देशवाहन - ये सभी सुविधाएँ प्रबन्धक के बिना संभव नहीं है।

जिस प्रकार मानव शरीर मस्तिष्क के बिना हाड़-मांस एक पुतला मात्र ही उसी प्रकार प्रबन्ध के बिना एक व्यावसायिक संस्था, भूमि, श्रम, पूँजी सभी निष्क्रिय मात्र है। इस तरह व्यावसायिक संस्था में प्रबन्ध का सर्वोत्तम स्थान है।

प्रबन्ध के महत्व को निम्न बातों से स्पष्ट किया जा सकता है—

① संस्था के निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति - कोई भी संस्था का की ~~मुख्य उद्देश्य~~ स्थापना कुछ न कुछ उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए की जाती है। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रबन्धक का दायित्व बन जाता है। प्रबन्धक उद्देश्यों के प्राप्ति के लिए योजना बनाकर, निर्देशित, नियंत्रण एवं समन्वय स्थापित कर संस्था के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करते।

② गला काट प्रतिस्पर्धा का सामना के लिए - आज का व्यापार प्रतिस्पर्धा का बाजार हो गया है। उत्पादन का आकार बढ़ता जा रहा है। ग्राहकों की रुचियाँ भी समय-समय पर बदलता रहता है। जिससे वस्तु की किस्म, गुणवत्ता में सुधार होते रहते हैं। प्रतियोगिता के कारण विज्ञापन पर भी अधिक खर्च हो रहे हैं।

Scanned with CamScanner

अत्यधिक खर्च को रोकने के लिए एक अच्छा प्रबन्धक का होना जरूरी हो गया है। प्रतियोगितावाता में टिकने के लिए कम मूल्य पर अच्छी किस्म की वस्तुएँ ग्राहक को उपलब्ध ~~कराना~~ करना कुशल प्रबन्धक का कार्य होता है।

③ उत्पादन के विभिन्न साधनों में समन्वय बनाने के लिए- एक कुशल प्रबन्धक विभिन्न साधनों जैसे- भूमि, पूँजी, श्रम कच्चामाल एवं कुशल चयन व्यवस्था तथा समन्वय करके ~~अधिक~~ कम मूल्य पर अधिकतम उत्पादन को बढ़ावा देता है। प्रबन्धक, ~~[illegible]~~ उत्पादन में सहायता पहुँचाने वाली सामग्री को एकत्रित कर उनमें समन्वय ~~[illegible]~~ बनाने का कार्य करता है। कहा भी गया है कि ~~समन्वय~~ "समन्वय प्रबन्ध का सार है"

④ श्रम समस्याओं को दूर करने के लिए- किसी व्यावसायिक संस्था में मानवीय साधन जितना विकसित एवं कार्यकुशल होगा वह उतनी ही अधिक ~~उन्नति~~ उन्नति करेगा।

(4) - श्रमिकों की कार्यकुशलता में वृद्धि के लिए आधुनिक प्रबंध वित्तीय, प्रेरणाएँ प्रदान करता है जैसे - लाभ में भागिता, प्रबंध भागिता, प्रेरणात्मक मजदूरी लागू करना, कार्य करने की समय, प्रमापित कार्य, प्रशिक्षण, आवास एवं चिकित्सा इत्यादि का व्यवस्था करना। ऐसी व्यवस्था से नियोक्ता एवं श्रमिकों के बीच मधुर संबंध रहता है जिससे श्रमिक मनलगाकर कार्य करता है और कम मूल्य पर अधिकतम उत्पादन होता है।

(5) राष्ट्र के आर्थिक विकास के लिए - किसी देश की आर्थिक विकास कुशल प्रबंध पर निर्भर करती है। एक देश से दूसरे देश की तुलना में तीव्र गति से विकास करना अच्छे प्रबंध का परिणाम है क्योंकि प्रबंध के द्वारा ही सभी आर्थिक क्रियाओं को निर्देशित किया जाता है। जिससे कि तेज गति से विकास हो सके। प्रबंधक किसी देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

(6) पक्षों की समन्वय - संस्था में कार्य करने वाले कर्मचारी के हित व लक्ष्य अलग-अलग होते हैं उनके विचारों में भिन्नता रहती है।

इसलिए आपस में मतभेद, विवाद, झगड़ा होता ही रहता है। इन संघर्षों को समाप्त के लिए प्रबन्धक का योगदान सर्वश्रेष्ठ है। प्रबन्ध रचनात्मक संघर्षों को बढ़ावा देता है जिससे अधिक से अधिक लक्ष्यों की प्राप्ति की जा सके।

भारत में प्रबन्ध का महत्व :- हमारे देश में प्रबन्ध की आवश्यकता और अधिक हो गया है। क्यों कि हमारे देश में जनसंख्या अधिक है एवं साधन सीमित है। ऐसी स्थिति में एक कुशल प्रबन्ध द्वारा ही सर्वोत्तम एवं मितव्ययितापूर्ण उपयोग कर सकते हैं। श्रम, पूँजी एवं कच्चे माल से स्वयं विकास नहीं हो सकता है। इसके लिए प्रबन्धकीय ज्ञान की जरूरत है। जिससे अधिक से अधिक कम साधन एवं कम मूल्य पर उत्पादन करके किया जा सके। एक कुशल प्रबन्धक ही कंपनियों का सफल प्रबन्ध संचालन कर सकते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यदि भारत में तेज गति से आर्थिक विकास करना है तो प्रबंधकीय क्रान्ति लानी ही होगी तथा आर्थिक विकास में प्रबन्ध के महत्व को स्वीकारना ही होगा।

— x —